Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 09/November/2023 IJRAW: 2023; 2(12):16-19 Accepted: 10/December/2023

# किशनगढ़ की चित्रकला के आधुनिक कलाकार

***[1]डॉ. रामस्वरूप साहू और [2]हेमन्त धवल**

*[1]प्राचार्य, राजकीय महाविधालय, कुचामन, म.द.स. विश्वविधालय, अजमेर, राजस्थान, भारत।

[2]शोधार्थी, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविधालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

**सारांश**

किशनगढ़ की चित्रकला ने प्राचीन समय से लेकर अब तक कई परिवर्तन देखे। कला तकनीक, कला के विषय, शैलियों में परिवर्तन जारी है तथा आगे भी निरंतर जारी रहेगा। किशनगढ़ की परम्परागत कला ने जो विश्वसनीयता प्राप्त की है उसका कोई सानी नहीं है। कला की पम्परागत कला अब नवीनता की और अग्रसर है। आधुनिक कलाकार वर्तमान में जो कार्य कर रहे है वह भी प्रसंसनीय है। कई कलाकार वर्तमान में परम्परागत कला को नवींन प्रयास के साथ आगे बढा रहे है तो कही कलाकार वर्तमान यथावत कला को जारी रखे हुए है। कई कलाकार आधुनिक कला के नवीन प्रयोगों में जुड़े है।

**मुख्य शब्द:** कलाविद, तत्वमिमाक्षी, हिमायती, कमल-विलोकत, हस्तसिद्ध, कृतित्व, चितेरा, किशनगढ़-रत्न व जल पद्धति आदि।

## प्रस्तावना

भारतीय चित्रकला कला-संपदा युगों से जगत में प्रतिष्ठित होती रही है। मध्यकाल में दरबारी चित्रकला का दौर चला था तथा राजा के दरबार में चित्रकार हुआ करते थे। किशनगढ़ राज्य में सावंत सिंह के समय चित्रकला का विकास हुआ। किशनगढ़ राज्य की स्थापना के पश्चात महाराजा किशनसिंह के समय से ही किशनगढ़ राज्य में साहित्य व चित्रकला पर रचनाये होना शुरू हुई। राजा मानसिंह व राजा रूपसिंह के समय में उल्लेखनीय कार्य होना प्रारंभ हुआ। सावंतसिंह ने मुग़ल कला की विशेषताओ के आधार पर किशनगढ़ चित्रकला का विकास किया। सावंत सिंह द्वारा रचे गए पद, कविता एवं सवैयों आदि से प्रेरित होकर अनुपम चित्र बनवाये गए। सावंत सिंह के समय में सुरध्वज निहालचंद ने इनकी काव्य रचनाओ पर काम किया। निहालचंद ने 1778 ई. में विश्व प्रसिद्ध कृति राधा (बणी-ठणी) को बनाया था। इस चित्र को बनाकर निहालचन्द ने किशनगढ़ नगर को सम्पूर्ण विश्व में पहचान दिलवायी। विश्व प्रसिद्ध चित्र बणी-ठणी ने किशनगढ़ के कला सौन्दर्य को विश्व स्तर की कलाओ में प्रतिष्ठित किया है। अमीरचंद, धन्ना, भंवरलाल, छोटू, सुरध्वज, मोरध्वज निहालचन्द व नानकराम आदि किशनगढ़ शैली के प्रसिध्द चित्रकारों में गिने जाते है जिन्होंने किशनगढ़ की कला को अपना अमूल्य योगदान दिया। किशनगढ़ की कला में राधा-कृष्ण, नागर समुच्चयन, बारहमासा, गीत-गोविन्द, भागवत पुराण, वैभव विलास व राग-रागनियाँ आदि विषयों पर सुंदर चित्रण किया हैं। आज किशनगढ़ की कला कई नवीन आयामों को पा चुकी है।

## साहित्यावलोकन

वाजबा खान द्वारा लिखित शोध "किशनगढ़ चित्रकला में भावाभिव्यंजना के मूलाधार" में किशनगढ़ की चित्रकला पर विस्तार पूर्वक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। "Documentation of Minature Painting On Wood in Kishangarh, Rajasthan" डॉक्युमेंट्री पत्रिका में किशनगढ़ के लकड़ी के कार्य पर एक लघु शोध प्रस्तुत किया गया है। सावल सिंह द्वारा लिखे गए लघु शोध "किशनगढ़ चित्रशैली के समसामयिक प्रतिनिधि चित्रकार श्री शहजाद अली शैरानी का व्यक्तित्व और कृतित्व" में चित्रकार शहजाद अली पर विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया हैं। अलंकृति आर्टिस्ट ग्रुप द्वारा प्रस्तुत मोनोग्राफ में अजमेर आधुनिक कलाकारों पर चित्रों के साथ एक सामान्य जानकारी उपलब्ध करायी गयी है।

## परिकल्पना

प्रस्तुत शोधपत्र में परिकल्पना की गयी है कि किशनगढ़ के आधुनिक कला के कला कार्यो पर। परम्परागत कला से आधुनिक कला में जो नवीन परिवर्तन हुए उन पर प्रकाश डाला गया है इस शोध के माध्यम से।

## शोध उद्देश्य

- उपरोक्त शोध विषय में हमारे द्वारा 6 महीने का समय लेते हुए संपन्न किया गया। हमारे शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार से है-
- इस शोध द्वारा वर्तमान में किशनगढ़ की कला स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।
- किशनगढ़ के आधुनिक कलाकारों के कार्यो पर प्रकाश डालना।

***Corresponding Author:** डॉ. रामस्वरूप साहू

- आधुनिक कलाकारों के बारे में जानना।

## शोध-प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में मुख्य रूप से व्याख्यात्मक एवं विवेचनात्मक शोध प्रविधि को प्रयोग में लाया गया है। प्रस्तुत शोध में साक्षात्कार विधि को प्रयोग में लाया गया है। शोध अध्ययन हेतु पुस्तक, मोनोग्राफ, पेंटिंग आदि का शोध उपकरणों के रूप में प्रयोग किया गया है।

## किशनगढ़ की चित्रकला का बदलता स्वरूप

किशनगढ़ के परम्परागत लघुचित्रण में निश्चित तकनीक व निश्चित माध्यम थे लेकिन वर्तमान में कलाकरों के सामने कई प्रकार की तकनीक व माध्यम हैं जिसमे कलाकर अपनी इच्छा अनुसार कार्य कर सकता हैं। वर्तमान में कलाकारों द्वारा प्राकृतिक रंगों का प्रयोग कम हुआ है क्योकि इन रंगों को बनाने में बहुत समय लगता हैं इसलिए कलाकारों द्वारा मार्केट में उपलब्ध रंग प्रयोग में लिए जाते हैं। तेल रंग पद्धति, जल रंग पद्धति, वाश पद्धति आदि कई विधाओ का प्रयोग कलाकारों द्वारा किया जाने लगा हैं। यह प्रमुख कारण हैं जिससे किशनगढ़ की कला का आधुनिक स्वरूप बदलता हुआ नजर आ रहा हैं। किशनगढ़ की चित्र शैली में पूर्व में प्रयुक्त विषयो में कलाकार द्वारा आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा रहा हैं जैसे वर्तमान में कालिदास के काव्यों, महाभारत व रामायण पर चित्रण होने लगा हैं जो पूर्व में नहीं होता था। किशनगढ़ शैली के विषय दरबारी या प्रकृति चित्रों तक ही सीमित थे। यहाँ कला राजा-महाराजाओं और दरबारियों के मनोरंजन के लिये होती थी। परन्तु आज की चित्रकला पर धार्मिक और प्रेमपूर्ण, कल्पनाओ के प्रतीक कृष्ण और अनेक देवताओं, राजाओं, दरबारियों, नृतकियों, भीतरी महलों के दृश्यों, जंगल की परियों और गाना गाते हुए ग्वालो को चित्रित करने के हिमायती नहीं हैं क्योकि अब स्थिति बदल चुकी हैं, अब यथार्त को चित्रित करने की आवश्यकता हैं। इसलिये आज के चित्रों में सामाजिक नारी, मशीनों आदि की भरमार हैं। जब हमारा संसार आधुनिकता की और तेजी से बढ़ रहा हैं तब भारतीय चित्रकारों से पुरातनता का दामन पकडे रहने की आशा नहीं की जा सकती हैं।1 वर्तमान में कला की तकनीको में कई विविधताये नजर आती है। किशनगढ़ के समकालीन कलाकारो ने जल रंग पद्धति, वाश पद्धति, तेल रंग पद्धति, पेस्टल रंग पद्धति, पेन्सिल रंग पद्धति, एक्रेलिक रंग व रंगीन पेन चित्रण पद्धति आदि के प्रयोग से चित्रों का सर्जन किया है।

## किशनगढ़ के आधुनिक कलाकार

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में किशनगढ़ चित्रकला की परम्परागत कला के स्वरूप में निरंतर गिरावट आती गयी व कई कलाकारों ने अपनी क्षेत्रीय कला का त्याग कर दिया। वे अब नवीन कलाओं में कार्य करने लगें। कलाकार अन्य राज्यों की शैलियों में चित्रण कार्य करने लगे, तब कुछ कलाकार ऐसे भी थे जो किशनगढ़ की परम्परागत चित्रकला के नियमो का पूर्व वर्णित नियमों के आधार पर चित्रण कार्य कर रहे थे। उन्होंने अपने निरंतर कला परिश्रम के बल पर परम्परागत कला को वर्तमान में भी जीवित रखने का प्रयास किया हैं। वर्तमान में अब ये कलाकर गिनती के ही रह चुके हैं जो पुर्णतः किशनगढ़ के पारम्परिक कला पर कार्य कर रहे हैं। ये कलाकार निम्न है-

**शहजाद अली:** आप ने विलुप्त सी होती किशनगढ़ कला को फिर से नया आयाम प्रदान किया। किशनगढ़ चित्र शैली के पुनुरुथान में आपका महत्वपूर्ण योगदान हैं। आपका जन्म 25 सितम्बर 1948 किशनगढ़ में हुआ। आपकी आरंभिक शिक्षा 8वीं तक महाराजा मिडिल स्कूल से प्राप्त की तथा 11वीं आपने राजकीय उच्च माध्यमिक विधालय, किशनगढ़ से उतीर्ण की। आगे की कला शिक्षा की प्राप्ति हेतु आपको सवाई रामसिंह शिल्प कला मंदिर जयपुर में प्रवेश करवाया गया जहा आपको कलाविद श्री कृपालसिंह शेखावत का सानिध्य प्राप्त हुआ तथा वही आपके कलागुरु बने।

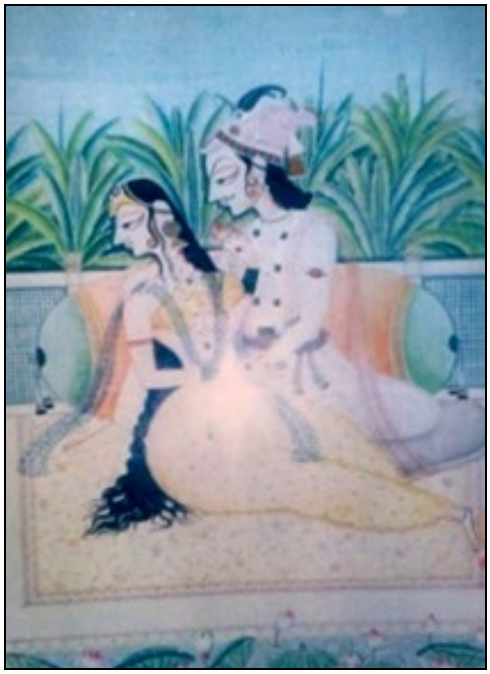

**चित्र 1:** नायक-नायिका, (शहजाद अली द्वारा बनाया हुआ चित्र)

Mr. Shahzad Ali is the third generation of the family who is taking up the legacy of miniature painting, The tradition was started by it. Faiz Ali sahib, who was painter at the royal court, after his young death, his kids were looked after by the royal family of Kishangarh and it. Faiyaz Ali one of sons of Lt. Faiz Ali learnt the same art, Mr. Shaizad Ali learnt the skil from his father Faiyaz Ali and now the legacy has been passed to Faiyaz Ali, son of Shaizad Ali, thaou he himself doesn't paints but run the business of the same art having hired artisans across the village.2

आप का जन्म साहित्य-कला मनीषी तत्वमिमांक्षी व उच्च कोटि के विचारक डॉ. फैयाज अली खां के यहाँ हुआ। आप अपनी रुचियों के कारण अपने पिता के प्रिय थे। आपके पिता कलाकार तो नहीं थे किन्तु कला का ज्ञान बारिकियों से रखते थें। आपके पूर्वज निहाल खां मुगल बादशाह के यहाँ फौज में नौकरी करते थे। आपको आगे की कला शिक्षा में श्री कृपालसिंह जी शेखावत का मार्गदर्शन मिला। आपने अपने पिता की बात मानकर किशनगढ़ चित्र शैली पर कार्य करना शुरू किया व किशनगढ़ चित्र शैली को वर्तमान में पुनः जीवित किया। आप किशनगढ़ चित्र शैली के साथ हि अन्य कलाओ में भी निपुण थे। आपका विवाह नशीम अख्तर से हुआ। आपने मुगल, पर्शियन, पहाड़ी, राजस्थानी शैलियों व भित्ति चित्रण पर कार्य किया। मुख्यत आपने किशनगढ़ चित्र शैली में नागरीदास व कालिदास के काव्यों पर चित्रण कार्य किया।3 1997 प्रथम बार आप ललित कला अकादमी, उज्जैन से सम्मानित हुए। कलाविद श्री रामजैसवाल के साथ अपने कैनवास चित्र प्रदर्शनी में अपने चित्र प्रदर्शित किये। ललित कला अकादमी द्वारा अपके चित्रों को तीन बार सम्मानित किया जा चूका हैं। जहा आपने राधा-कृष्ण पर बनी लम्बी कृति प्रदर्शित की। प्रमुख रचनाये कमल-बिलोकत युगल, भोरलीला, दुष्यन्त दर्शनत शकुन्तला व दुर्वासा का क्रोध आदि।4

**स्व. गोपाल कुमावत:** 11 नवम्बर,1961 में आपका जन्म ननिहाल में जांवला गाँव, नागौर में हुआ। आपके पिता रामलाल किशनगढ़ के निवासी थे। आपकी माता ने आपको कठिन परिस्थतियों में 10वीं की पढाई करवाई। आपकी बाल्यावस्था में ही आपके पिता का देहांत हो

गया। अतः आपकी माता ने कठिन संघर्ष करते हुए आपको व आपके भाई कन्हैयालाल का पालन पोषण किया। आपने प्रारम्भ में वैष्णवदास के यहाँ चित्रण सीखा जिस से आपकी आर्थिक स्थिति कुछ बेहतर हुई किन्तु व्यावसायिक कार्य करने से आपके मन को संतुष्टि नहीं हुई इसीलिए आपने लघुचित्र शैली के चितेरे वेदगोपाल शर्मा के सानिध्य में कला शिक्षा प्राप्त की। आपके द्वारा चित्रित चित्रों में मनमोहक रंग योजना व रेखाओं का प्रवाह अतीव आकर्षण का विषय हैं। अपने ग्रंथो व् काव्यो के आधार पर अनेको चित्रों का सर्जन किया। आपकी प्रतिभा को दृशको ने सराहा व आपको 'किशनगढ़ रत्न' जैसे सम्मान से से सम्मानित किया गया।

**वैष्णव दास जी:** आपका जन्म 28 जनवरी, 1942 को स्व. जगदीश प्रसाद व्यास के यहाँ किशनगढ़ राज्य में हुआ। आपने अपनी आरंभिक शिक्षा किशनगढ़ के के.डी.जैन स्कूल से हुई से पूर्ण की व दयानन्द महाविधालय से अपनी कला शिक्षा पूर्ण की। जहा से आपको कलाविद श्री राम जैसवाल एवं रवि संखालकर का सानिध्य प्राप्त हुआ। आपने चित्रण का आरंभ टेम्परा तकनीक से खनिज रंगों का प्रयोग करते हुए किया। आपको बचपन से ही चित्रकला में रूचि थीं। आपने अपने नाना गोवर्धन लाल के द्वारा बनाये गए चित्रों की अनुकृति करते हुए चित्र बनाने की कोशिश की। आपके चित्रों में रंगों की ताजगी व् सधी हुई रेखाओ का प्रवाह स्पष्ट नजर आता हैं।

**शफीर्कुरहमान रौशनी:** आपका जन्म 30 अप्रैल, 1954 को किशनगढ़ के पुराने शर में श्री अब्दुल रहमान खां के यहाँ हुआ। आपकी माता सुगरा बेगम थीं। आपने अपनी प्रारंभिक शिक्षा हायर सैकेंडरी स्कूल, किशनगढ़ से की। आपको प्रतिष्ठित चित्रकार भगवान दुबे का सानिध्य मिला जिनसे अपने स्टील लाइफ, दृश्य चित्र, मानवआकृतियाँ आदि का अध्ययन किया। पिता की मृत्यु के उपरान्त आजीविका चलाने हेतु अनेको कार्य में यत्न किये। चित्रकार शहजाद अली की कला को देखकर आपके मन में भी परम्परागत कला सिखने की ललक जागी। अपने व्यावसायिक रूप में अनेको चित्रों का सर्जन किया। अनेको विषयों को लेकर के अपने किशनगढ़ चित्र शैली में मौलिक कार्य किया। आज भी आप अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

**शंकर सिंह राठौड़:** आपका जन्म 8 अगस्त, 1948 को किशनगढ़ में स्व. ओंकार सिंह के उच्च व सम्भ्रात परिवार में हुआ। आपके पिता डी.वाई.एस.पी. के पद पर कार्यरत्त थे। आपकी आरंभिक शिक्षा महाराजा मिडिल स्कूल में हुई। आपने अजमेर के महाविधालय से शिक्षा पूर्ण की। आपकी माता चाँदकंवर स्वयं भी एक अच्छी कलाकार थी। आपने अपनी माता को गणेश जी की मूर्ति बनाते देखा जिस से आपके मन में कला का विचार उत्पन्न हुआ। आपके आरंभिक कला गुरु शांतिलाल वर्मा थे। इसके पश्चात आपने कलागुरु भगवानदास दत्त दुबे से भी कला का ज्ञान प्राप्त किया। आपने लघुचित्रण शैली में निरंतर कार्य किया। आपने अपनी विशेष पद्धति में खनिज पत्थर, चाय पत्ती, प्राकृतिक पत्तिया व फूलो आदि को घोटकर रंग तैयार किया व इनका प्रयोग किया। वर्तमान में किशनगढ़ की चित्रकला को लेकर कलाकारों में दो प्रकार की विचार धारा उत्पन्न हो चुकी है, वर्तमान में इन दोनो विचार धाराओ के मध्य द्वन्द की स्थिति चल रही हैं। पहली विचार धारा के अन्तर्गत कलाकारों का मानना हैं की पूर्व में प्रचलित परम्परागत चित्र शैली में किसी भी प्रकार परिवर्तन उन्हें पसंद नहीँ। वे परम्परागत कला को उसी प्रकार से करना चाहते हैं जो पहले चल रही थी। वही दूसरी विचारधारा के अन्तर्गत वे कलाकार आते हैं जो परम्परागत कला में नवीन परिवर्तन देखना चाहते हैं। उनका मानना है की पम्परागत कला में लगातार चित्रण होने से कलाकरों की कार्यक्षमता में तो बेहतर निखार आ रहा है लेकिन उनका मानसिक विकास नहीं हो पा रहा हैं। यही कारण हैं की कुछ कलाकार परम्परागत चित्रों के विषय, तकनीक, रूपों आदि को लेकर के परिवर्तन कर रहे हैं। इन सबके के मध्य कलाकारों का तीसरा वर्ग भी हैं किशनगढ़ में जो परम्परागत कला की ओर तनिक भी ध्यान ना देते हुए लगातार नवीन कला प्रयोग में कार्यरत्त हैं। यथार्थवादी व नवीन प्रयोगों में कार्य कर रहा हैं। प्रथम विचार धारा वाले कलाकारों में जो कलाकार थे वो वर्तमान में भी परम्परागत कला को आगे बढ़ा रहे हैं, उनका हम अध्ययन पूर्व में कर चुके हैं। अब ऐसे कलाकारों के बारे में अध्ययन करेगे जो परम्परागत कला में नवीन प्रयोग कर रहे है व दुसरे कलाकार जो पूरी तरह से नवीन प्रयोगों में जुड़े हुए कार्य कर रहे हैं।

**पवन कुमावत:** आपका जन्म 13 जून 1966 में हुआ।5 रलावता, किशनगढ़ रियासत की राजधानी रूपनगढ़ के निकट राजकीय विधालय, किशनगढ़ से आपने हायर सेकेण्डरी की परीक्षा उतीर्ण की व किशनगढ़ महाविधालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की। चित्रा भार्गव के मार्गदर्शन में आपने स्नातकोत्तर की शिक्षा पूर्ण की। स्नातकोत्तर शिक्षा के दौरान आपको कलाविद श्री राम जैसवाल जैसे कला गुरु का सानिध्य प्राप्त हुआ। आपने कला गुरु श्री राम जैसवाल के निर्देशन में कला का विधिवत ज्ञान प्राप्त किया। आपने अपने भाई ब्रजमोहन कुमावत के साथ किशनगढ़ में रहते हुए शिक्षण कार्य किया। आपके पिता नारायण लाल कुमावत व माता नर्मदा देवी एक धार्मिक प्रवृति की महिला हैं। आप ने डॉ. अनुपम भटनागर, डॉ. सविन्द्र सिंह चुग और किशनगढ़ शैली के हस्तसिद्ध कलाकार स्व. श्री गोपाल कुमावत से चित्रकला के विविध विधाओं का ज्ञान प्राप्त किया। एक वर्ष तक कांगड़ा शैली के व्यावसायिक चित्रण करने के पश्चात भीलवाड़ा के विवेकानंद केंद्रीय विधालय, हरडा में कला अध्यापक के पद पर कार्य किया। अध्यापक के तौर पर कार्य करते हुए आपने अवकाश के अवसर में वनस्थली विधापीठ निवाई से महान कालाचार्य देवकीनन्दन शर्मा के निर्देशन में भित्ती चित्रण में डिप्लोमा प्राप्त किया। RPSC की परीक्षा उतीर्ण की तथा कला अध्यापक के रूप में कार्य किया राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, किशनगढ़ में। वर्तमान में आप राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल के प्राचार्य के रूप में कार्य कर रहे हो। आपके एक चित्र "मूड ऑफ नेचर" को राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा सम्मानित किया जा चूका हैं। आपने हाल ही में अमेरिका में अपनी प्रदर्शनी आयोजित की जो की ललित कला अकादमी द्वारा आपको भेजा गया था। आपको मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रसिद्ध कालिदास अवार्ड से भी सम्मानित किया जा चूका है।6

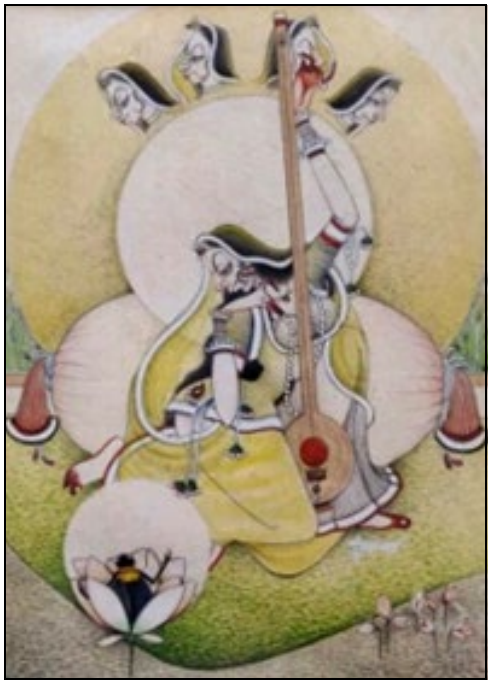

**चित्र 2:** नायक-नायिका (शहजाद अली द्वारा बनाया हुआ चित्र)

**Award**

- All-Rajasthan inter college-cartoon-painting-first-price-1991.
- 'Sampradayik sadbhavana-Painting' Ajmer. Universit-Ajmer-First Price 1991.
- 'Nagari Das Kala Sansthan' Awards-1994-1998.
- Dakshin Madhya Sanskartik Kendra-Nagpur–Award.
- Rajasthan Lalit Kala Akademi-Aeard,2001 and 2008
- Kali das akademi-Ujjain, National Award, 2005 and 2010.7

**ब्रज मोहन कुमावत:** आपका जन्म रलावता नामक स्थान पर 4 जुलाई, 1961 को नारायण लाल कुमावत के यहाँ हुआ। आरम्भिक शिक्षा आपकी आपके ननिहाल जयपुर जिले के फुलेरा कस्बे में हुई। माध्यमिक शिक्षा आपकी रलावता में हुई। आपने 10वीं कक्षा उतीर्ण करने के बाद आप जीविकापोर्जन हेतु किशनगढ़ आ गये। आपने उत्तम शर्मा के यहाँ चित्रण कार्य सीखा। इन्ही के सानिध्य में आपको परम्परागत कला में सिद्धहस्तता प्राप्त हुई। चित्रकला को आपने सर्जन का माध्यम बनाया अतः आप मौलिक सर्जन नहीं कर पाये। आपने नाथद्वारा चित्र शैली के चित्रण कार्य से शुरुआत की अपने कला यात्रा की। आपने सभी कलक शैलियों कार्य किया किन्तु आपको कांगड़ा चित्र शैली पारंगत थे। कांगड़ा चित्रण में आपकी अलग ही पहचान हैं।

वर्तमान में किशनगढ़ की कला में कई कलाकार कार्यरत्त है जो अपने अनुसार कला का सृजन कर रहे है। वर्तमान की कला में कई कलाकार स्वतन्त्र रूप से कला सृजन में जुड़े है। परम्परागत कला को आगे बढ़ाने में आज भी कई नामी तथा गुमनाम कलाकार कार्यरत्त हैं। नविन माध्यमों तथा तकनीकों के माध्यम से भी किशनगढ़ की कला नवीनता की तरफ प्रसारित हो रही हैं।

## निष्कर्ष

इस शोध पेपर में हमने 6 महीने का अध्यन करते हुए किशनगढ़ के कला पर अध्ययन प्रस्तुत किया है। किशनगढ़ के कलाकारों द्वारा वर्तमान में किये गए कार्य तथा उनके आधुनिक चित्र विषय पर समीक्षा की गयी है। आधुनिक समय के बदलते दौर ने चित्रकार को न केवल नए विषय प्रदान किया है बल्कि नविन माध्यम भीं प्रदान किये है। परम्परागत कला को भी नविन माध्यमों से जोड़ते है कलाकार द्वारा कई नविन प्रयोग किये गए है। कलाकारों द्वारा दिया गया साक्षात्कार इस शोध को मजबूती से एक आयाम प्रस्तुत करते है। किशनगढ़ में कला आज भी एक नए स्वरूप में अपने विकास की तरफ अग्रसर है इस बात की पुष्टि हमारा ये शोध करता है।

## संदर्भ


1. खां, कु. वाजबा–किशनगढ़ चित्रकला में भावाभिव्यंजना के मूलाधार, इलाहबाद विश्वविधालय, इलाहाबाद, 1999 ई., पृ.-196
2. Documentation of Minature Painting On Wood in Kishangarh, Rajasthan, This document has been written designed, illustrated, photographed by student researchers, National Institute of Fashion Tecnology, New Delhi, Depatment of Design space M.Des (2016-18), पृ.सं.-28,
3. धवल, हेमन्त-शहजाद अली शैरानीं, साक्षात्कार किशनगढ़ के समकालीन चित्रकार, किशनगढ़, 1-10-2020.
4. सिंह, सावल-किशनगढ़ चित्रशैली के समसायिक प्रतिनिधि चित्रकार श्री शहजाद अली शैरानी का व्यक्तित्व और कृतित्वरू एक अध्ययन, अप्रकाशित लघु-शोध प्रबन्ध, अजमेर, सत्र-2008-2009, पृ. 26-32.
5. अलंकृति आर्टिस्ट ग्रुप–मोनोग्राफ, कला लक्ष्मी सदन न्यू कालोनी, रामगंज, अजमेर, 2004 ई., पृ.-11
6. धवल, हेमन्त–पवन कुमावत, साक्षात्कार किशनगढ़ के समकालीन चित्रकार, किशनगढ़, पृ.-196 1-10-2023.
7. अलंकृति आर्टिस्ट ग्रुप–मोनोग्राफ, कला लक्ष्मी सदन न्यू कालोनी, रामगंज, अजमेर, 2004 ई., पृ.-11